अरहर

दलहनी फसलों में हमारे प्रदेष में चने के बाद अरहर का स्थान है यह फसल अकेली तथा दूसरी फसलों के साथ भी बोई जाती है। ज्वार, बाजरा, उर्द और कपास, अरहर के साथ बोई जाने वाली प्रमुख फसलें हैं।
हमारे देष की उत्पादकता अखिल भारतीय औसत से ज्यादा है। सघन पद्धतियों को अपनाकर इसे और बढ़ाया जा सकता है।

खेत का चुनावः

अरहर की फसल के लिए बलुई दोमट व दोमट भूमि अच्छी होती है। उचित जल निकास तथा हल्के ढालू खेत अरहर के लिए सर्वोत्तम होते हैं।

खेत की तैयारीः

खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के बाद 2–3 जुताइयां देषी हल से करनी चाहिए। जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को तैयार कर लेना चाहिए।

उन्नतिषील प्रजातियां :

प्रजाति उपयुक्त क्षेत्र	बोने का उपयुक्त समय	पकने की अवधि (दिनों में)	उपज (कु./हे.)	विषेषतायें
टा–21	मध्य अप्रैल मूंग के साथ	160–170	16–20	सम्पूर्ण उ.प्र मैदानी क्षेत्र में गेहूँ बोया जा सकता है।
मनक	मध्य जून	160–170		मैदानी क्षेत्र में गेहूबोया जा सकता है।

बुवाई का समयः

देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई जो लगभग 270 दिन में तैयार होती है, जुलाई माह में की जाती है। अधिक उपज लेने के लिए टा–21 प्रजाति को अप्रैल प्रथम पखवारे में ग्रीष्म कालीन मूंग के साथ सह–फसल के रूप में बोने के लिए जायद में बल दिया जा चुका है। इसके दो लाभ हैः
(अ) फसल नवम्बर के मध्य तक तैयार हो जाती है एवं गेहूँ की बुवाई में देर नहीं होती है।
(ग) मेड़ों पर बोने से अच्छी उपज मिलती है।

बीज का उपचारः

सर्वप्रथम एक कि.ग्रा. बीज को 2 ग्राम थीरम तथा एक ग्राम कार्बोन्डाजिम से उपचारित करें। बोने से पहले हर बीज को अरहर के विषिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। तेज धूप से कल्चर के जीवाणु के मरने की आषंका रहती है। ऐसे खेतों में जहां अरहर पहली बार काफी समय बाद बोई जा रही हो, कल्चर का प्रयोग अवष्य करें।

बीज की मात्रा तथा बुवाई विधिः

बुवाई हल के पीछे कूंडों में करनी चाहिए। बुवाई के 20–25 दिन बाद पौधे की दूरी, सघन पौधे को निकालकर निष्चित कर देनी चाहिए।

प्रजाति	बुवाई का समय	बीज की दर	बुवाई की दूरी (से.मी.)	
पौधे से पौधे			कि.ग्रा. /हे.	
पंक्ति से पंक्ति				
टा–21	जून का प्रथम पखवारा	12–15	60	20
यू.पी.ए.	मध्य जून	15	45–60	20
एस–120				
नरेन्द्र–1	जुलाई प्रथम सप्ताह	15–20	60	20
अमर	जुलाई ’’	15–20	60	20

कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं बीज की मात्रा 20–25 कि.ग्रा./ हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए।

उर्वरकों का प्रयोगः

अरहर की अच्छी उपज लेने के लिए 10–15 कि.ग्रा. नत्रजन, 40–45 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 20 कि.ग्रा. सल्फर की प्रति हे. आवष्यकता होती है। अरहर की अधिक से अधिक उपज लेने के लिए फास्फोरस युक्त उर्वरकों जैसे सिंगल सुपर फास्फेट, डाई अमोनियम फास्फेट का प्रयोग करना चाहिए। सिंगिल सुपर फास्फेट प्रति हे. 250 कि.ग्रा. या 100 कि.ग्रा. डाई अमोनियम फास्फेट तथा 20 किग्रा. सल्फर पंक्तियों में बुवाई के समय चोंगा या नाई की सहायता से देना चाहिए, जिससे उर्वरक का बीज के साथ सम्पर्क न हो। यूरिया खाद की थोड़ी मात्रा (15–20 कि.ग्रा. प्रति हे.) केवल उन खेतों में जो नत्रजन तत्व में कमजोर हो, देना चाहिए। उर्द जैसी सह–फसलों को अरहर के लिए प्रयुक्त खाद की आधी मात्रा दें। सितम्बर में बुवाई हेतु 30 से 40 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर नत्रजन के प्रयोग से अच्छी उपज प्राप्त होती है।

सिंचाई :

अरहर टा–21 तथा यू.पी.ए.एस.–120 तथा आई.सी.पी.एल.–151 को पलेवा करके तथा अन्य प्रजातियों को वर्षाकाल में पर्याप्त नमी होने पर बोना चाहिए। देर से पकने वाली प्रजातियों में पाले से बचाव हेतु दिसम्बर या जनवरी माह में सिंचाई करना लाभप्रद रहता है।

निकाई–गुड़ाई :

वर्षाकाल में खरपतवारों की बढ़वार लगभग तीन चार सप्ताह बाद काफी हो जाती है। अतः बुवाई के एक माह के अन्दर ही एक निराई करनी चाहिए। यदि अरहर की शुद्ध खेती की गयी हो तो दूसरी निराई पहली के 20 दिन बाद करना आवष्यक होगा। पेंडामैथलीन (30 ई.सी.) 3.3 लीटर या

एलाक्लोर (50 ई.सी.) 4 लीटर मात्र को 700–800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के तुरन्त बाद पाटा लगाकर जमाव से पूर्व छिड़काव करें।

फसल सुरक्षाः

(अ) कीटः

फली बेधक कीटः

पहचानः इनकी गिडारें फलियों के अन्दर घुसकर हानि पहुँचाती हैं। क्षतिग्रस्त फलियों से छिद्र दिखाई देते हैं।

उपचारः इसकी रोकथाम हेतु निम्न में से किसी एक कीटनाषक रसायन का छिड़काव फसल में फूल आने पर करना चाहिए।

1. मोनोक्रोटोफास (36 ई.सी.) 800 मि.ली. प्रति हेक्टर।
2. इन्डोसल्फान (35 ई.सी.) 1.5 लीटर प्रति हेक्टर।
3. निबोली 5 प्रतिषत + 1 प्रतिषत साबुन घोल।

पत्पी लपेटक कीटः

पहचानः सूंडियां पीले रंग की होती हैं जो पौधे की चोटी की पत्तियों को लपेटकर सफेद जाला बुनकर उसी में छिपी पत्तियों को खाती है।

उपचारः इसकी रोकथाम हेतु निम्न में से किसी एक कीटनाषक का बुरकाव/ छिड़काव करना चाहिए।

1. **मोनोक्रोटोफास (36 ई.सी.) 800 मि.ली. प्रति हेक्टेयर या**
2. **मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिषत चूर्ण 25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर**

अरहर का उकठा रोगः

पहचानः यह फ्यूजेरियम नामक कवक से फैलता है। यह पौधों में पानी व खाद्य पदार्थ के संचार को रोक देता है जिससे पंत्तियां पीली पड़कर सूख जाती हैं और पौधा सूख जाता है।

उपचारः

1. जिस खेत में उकठा रोग का प्रकोप अधिक हो, उस खेत में 3–4 साल तक अरहर की फसल नहीं लेना चाहिए।
2. ज्वार के साथ अरहर की सहफसल लेने से किसी हद तक उकठा रोग का प्रकोप कम हो जाता है।

कम अवधि पर अरहर की फसल में एकीकृत कीट प्रबन्धनः

1. अरहर के खेत में चिड़ियों के बैठने के लिए बांस की लकड़ी टी आकार का 10 खपच्ची प्रति हेक्टेयर के हिसाब से गाड़ दें।
2. जब शत प्रतिषत पौधों में फूल आ गये हों और फली बनना शुरू हो गया हो। उस समय इन्डोसल्फान 0.07 प्रतिषत घोल का छिड़काव करना चाहिये।

मध्यम एवं लम्बी अवधि की अरहर की फसल में एकीकृत कीट प्रबन्धनः

1. प्रथम छिड़काव के 15 दिन पश्चात डाइमेथोएट 0.03 प्रतिषत घोल का छिड़काव करना चाहिये।

2. द्वितीय छिड़काव के 10–15 दिन पश्चात आवष्यकतानुसार निम्बोली के 5 प्रतिषत अर्क या नीम के किसी प्रभावी कीट नाषक का छिड़काव करना चाहिये।

मुख्य बिन्दुः

1. बीज शोधन आवष्यक रूप से किया जाये।
2. समय से बुवाई की जाये।
3. विरलीकरण भी आवष्यक है।